ISSN : 2320-0391

साहित्य और संस्कृति

सृजन ಸೃಜನ

हिंदी-कन्नड त्रैमासिक पत्रिका ಹಿಂದಿ-ಕನ್ನಡ ತ್ರೈಮಾಸಿಕ ಪತ್ರಿಕೆ

Peer Reviewed Journal

जनवरी-मार्च २०२३ - 24

स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय साहित्य का अवदान

विशेषांक

118.	स्वतंत्रता संग्राम में गीतकारों का योगदान	डॉ. जाकिर हुसैन गुलगुंदी	268
119.	स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय कवियों का योगदान	डॉ भारती एच दोडमनी	270
120.	स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी कवियों का योगदान : एक सांधर्भिक विवेचन	डा.बी.एल.गुंडूर	272
121.	स्वतंत्रता संग्राम में कविताओं का योगदान : निराला के संदर्भ में	डॉ साइराबानू नवलगुंद	275
122.	स्वतंत्रता आंदोलन मे हिंदी के साहित्यकारों का योगदान	डा. गीता एच तलवार	277
123.	स्वतंत्रता संग्राम और माखनलाल चतुर्वेदी का साहित्य	डॉ. जयलक्ष्मी एफ.पाटील	279
124	भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर विविध विभूतियों के विचार	लालसाब हुसेन पेंढारी	281
125.	'पंडित रामनरेश त्रिपाठी के काव्य में राष्ट्रिय भावना'	श्रीमती एम.एन. होम्बाली	283
126.	स्वतंत्र संग्राम के आंदोलन में राष्ट्रीय भावना	डॉ. नीलांबिके पाटील	285
127.	स्वतंत्रता आंदोलन में बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' जी का योगदान	नेहा गंगवार	287
128.	बाबू भारतेन्दु हरिश्चंद्र के नाटकों में राष्ट्रीय चेतना	श्री सागर कांबल	289
129.	स्वतंत्रता संग्राम मे भारतीय कहानीकारो का योगदान	Shubhangi Ajay Hutgikar	291
130.	स्वतंत्रता संग्रान में भारतीय कवियों का योगदान	डा. सुलोचना हेच.इ	293
131.	स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय कवियों का योगदान	डॉ.विरनाथ पांडुरंग हुमनाबाद	294
132.	स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय गीतकारों का योगदान	श्रीमती वंदना	297
133.	पहिल्या स्वातंत्र्य लढ्यातील मुस्लिम नेत्यांचे योगदान (बख्त खान आणि तुर्रेबाज खान यांच्या संदर्भामध्ये)	प्रा. अशोक आलगोंडी	299

'पंडित रामनरेश त्रिपाठी के काव्य में राष्ट्रिय भावना'

• श्रीमती एम.एन. होम्बाली

राष्ट्रप्रेम का अर्थ केवल राष्ट्र की एकता और अखंडता की चिंता नहीं बल्कि राष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों, इसकी परम्पराओं, इनके निवासियों, इसकी धरती इसकी ऋतुओं, और त्योहारों के प्रति अनुराग भी है। इसके साथ ही इसकी नदियों, इसके समुद्रों और पहाड़ों से प्रेम भी देशप्रेम के अंतर्गत आता है।

रामनरेश त्रिपाठीजी की कविताओं में राष्ट्रीयता अत्यंत प्रेरणादायिनी है। काव्य में सर्वत्र राष्ट्रीय चेतना का स्वर मुखर हुआ है। त्रिपाठीजी द्वारा रचित निम्नांकित प्रार्थना अत्यधिक लोकप्रिय, उद्बोधक और प्रेरक है और हृदय में उच्च भावना का संचार करने में सर्वथा समर्थ एवं सक्षम है -

हे प्रभो ! आनंददाता ज्ञान हमको दीजिए।
शीघ्र सारे दुर्गणों से दुर हमसे कीजिए ।।
लीजिए हमको शरण में सदाचारी बनें।
ब्रह्मचारी, धर्मरक्षक, वीर व्रत-धारी बने ।।

उनका खंडकाव्य 'स्वप्न' एक नवयुवकोपयोगी राष्ट्रीय काव्य है। इसमें राष्ट्रीय-भावना का सुन्दर समावेश है। इसके द्वारा ओजस्वी स्वर मुखरीत हुआ है -

देश आत्म बलिदान तुम्हारा माँग रहा है आज वीर वर।
दिग्विजयी वीरों के वंशज ! युवओं ! उठो संगठित होकर ।।

'मानसी' में संगृहित अनेक कविताओं म देशभक्ति एवं राष्ट्रीय भावनाओं की अभिव्यक्ति प्रभावपूर्ण है। उनके उद्बोधन ओजस्वी और विचारोत्तेजक हैं। 'वह देश कौन-सा है?' शीर्षक कविता में भारत का गौरव-गान किया गया है। जन-जन के मन में इस कविता से देश-प्रेम की भावना जाग्रत होती है। इसका एक अंश अवलोकनार्थ उद्धृत है -

मन-मोहिनी प्रकृति की जो गोद में बसा है।
सुख स्वर्ग-सा जहाँ है वह देश कौन-सा है।
जिसका चरण निरन्तर रत्नेश धो रहा है।
जिसका मुकुट हिमालय वह देश कौन-सा है ?
सबसे प्रथम जगत में जो सभ्य था यशस्वी
जगदीश का दुलारा वह देश कौन-सा है ?
पृथ्वीनिवासियों को जिसने प्रथम जगाया,
शिक्षित किया सुधारा वह देश कौन-सा है?

त्रिपाठीजी ने मातृभूमि का वंदना और अभिनंदन करते हुए उनकी विजय की कामना की है -

ऐ मातृभूमि ! तेरी जय हो सदा विजय हो।
प्रत्येक भक्त तेरा सुख शांति-कांतिमय हो ।।
अज्ञान की निशा में, दुख से भरी दिशा में,
संसार के हृदय में तेरी प्रभा हृदय हो ।।
तेरा प्रकोप सारे जग का महाप्रलय हो।
तेरी प्रसन्नता ही आनंद का विजय हो ।।
वह भक्ति दे कि दुख में तुझको कभी न भूले,
वह शक्ति दे कि दुख में कायर न यह हृदय हो ।।

त्रिपाठीजी ने पथिक खंडकाव्य के अन्तिम छन्द में स्वतंत्रता के महत्व दासता से मुक्ति आनंद और स्वाधीन राष्ट्र में सुख शांति की उपस्थिति को रेखांकित करते हुए अपने राष्ट्रियता विचारों को निम्नलिखित अभिव्यक्ति प्रदान की है -

हुए स्वतंत्र, सुसभ्य, सच्चरित सच्चे देश-निवासी।
घर-घर में सुख-शाँति छा गई, रही कहीं न उदासी ।।
एक शुद्ध सच्चे प्रेमी ने आत्म-शक्ति साधन से।
मुक्त कर दिया एक देश को, नरक तुल्य शासन से ।।

'मिलन' खंडकाव्य में सपूत को देश-सेवा की दिक्षा देने का प्रेरक संदेश प्रदान करते हुए कवि का कथन है -

देकर देशभक्ति की शिक्षा करके सुदृढ विचार।
करिएगा स्वदेश-सेवा के लिए इसे तैयार ।।
हो यह बड़ा इसे कहिएगा मेरा यह सन्देश।
स्वतंत्रता ही बस तेरे जीवन का उद्देश्य ।।

'मानसी' काव्य संग्रह के अन्तर्गत संग्रहित 'कामना' शीर्षक कविता द्वारा इस स्वतंत्र-देश में जागृत होने की इच्छा व्यक्त कर त्रिपाठीजी ने अपनी उत्कट राष्ट्रीय भावना का परिचय दिया है -

जहाँ स्वतंत्र विचार न बदलें, मन में मुख में।
जहाँ न बाधक बने सबल निबलों के सुख में ।।
सबको जहाँ समान निजोन्नति का अवसर हो।
शांति-दायिनी निशा हर्ष-सूचक वासर हो ।।
भाँति सुशोभित हो जहाँ, ममता के सुखकर नियम।
बस, उसी स्वतंत्र स्वदेश में, जागे हे जगदीश हम ।।

अपनी बालोपयोगी कविताओं में भी त्रिपाठीजी ने राष्ट्रीय चेतना के स्वर को मुखरित किया है। इस दृष्टि से 'अरमान' शीर्षक बाल-कविता का एक अंश प्रस्तुत है -

रोको मत आगे बढ़ने दो, आजादी के दीवाने हैं,
हम मातृभूमि की सेवा में अपनासर्वस्व लगाएँगे।
हम उन वीरों के बच्चे हैं जो धुन के पक्के सच्चे थे,
हम उनका मान बढ़ाएँगे, हम जग में नाम कमाएँगे ।।

उन्होंने राष्ट्रीय और ओज से परिपूर्ण प्रयाण गीत भी लिखा है। 'बढ़े चलो बढ़े चलो' प्रयाण गीत उदाहरण स्वरूप उल्लेखनीय है -

सबको स्वतंत्र कर दे यह संगठन हमारा।
छूटे स्वदेश ही की सेवा में तन हमारा ।।
जब तक रहे फड़कती नस एक भी बदन में।
हो रक्त बूँद भर भी जब तक हमारे तन में ।।
छीने न कोई हमसे प्यारा वतन हमारा।
छूटे स्वदेश ही की सेवा में तन हमारा ।।

इस प्रकार रामनरेश त्रिपाठी जैसे हिन्दी के ऐसे राष्ट्रीय रचनाकार और महान कवि को कोटि-कोटि नमन।

■■

सहायक प्राध्यापिका
पी.पी.जी. कला महाविद्यालय मदन कोन. नं. 9964007402